

[Link to T/C](#)

Powerfully Purposed Transformation

Joe T. Green

Accepting God's Identity for You is Everything---Following Jesus into God's Kingdom---and surrendering to His Lordship Today---This is God's formula for changing mankind, revealing His will for your life, and winning the war for your soul.

Romans 12:2 KJV

(2) And be not conformed to this world: but be ye transformed by the renewing of your mind, that ye may prove what is that good, and acceptable, and perfect, will of God.

Copyright © 2021

All Rights Reserved. This book may not be copied or reprinted for commercial gain or profit. SKJV-King James Version of the Bible from; Published 1769; public domain

AMPC-Amplified Bible (classic); Copyright © 1954, 1958, 1962, 1964, 1965, 1987, by The Lockman Foundation.

English to Hindi has been translated by Copilot and DeeL Mistakes can be made. Check the English for author's exact meaning.

Hindi Scripture quotations are from the Word Project public-domain Hindi Bible text. Used for reference from their parallel Bible.

Pixabay License

Free for commercial use

No attribution required

Lion

Lamb

Alexandra Stockmar

Efrakmstocher

Divider Flourish Image by Gordon Johnson from Pixabay

[Link to T/C](#)

English Prologue

This is not a new teaching, or even a teaching, although everyone learns as they travel. I am attempting to show the pathway God laid out for human beings in the Garden of Eden and the path Jesus took so we could follow Him back into God's presence as citizens in His Kingdom. If you are tired of boring lectures without power, life, or destiny?

The Kingdom of God is here. The kingdom is still full of joy, peace,
and excitement in today's world.

It is not God's future plan, but rather today's agenda. Therefore, the Lord is accepting volunteers to join the kingdom's goal of establishing the mindset of His kingdom in the hearts of believers today.

If you identify as a Christian, live with the hope of attaining Heaven, and believe you will be raptured out of the current cultural war, you have become a victim of the devil's schemes and a party to their success. He always wants you to delay accepting the things of God until it is too late for them to affect the world we live in today. Discover what Satan is stealing from you today.

Because Jesus has finished all things needed for life and Godliness, our family, city, state, country, and world's future depends upon our recognizing, believing, claiming, and living in all of the things of God today, not tomorrow.

God has established our identity
as His child at the cross.

A willing and obedient heart is all it takes to live, move, and have your being, identity, and destiny in God. Therefore, passionately strive to establish a true legacy for your children. Without any exaggeration, I can say, enter at the risk of being forever changed!

Hindi Prologue

यह कोई नई शिक्षा नहीं है, और न ही वास्तव में कोई शिक्षा है, हालाँकि हर व्यक्ति यात्रा करते समय कुछ न कुछ सीखता ही है। मैं केवल वह मार्ग दिखाने का प्रयास कर रहा हूँ जो परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए अदन की वाटिका में रखा था, और वह मार्ग जिस पर यीशु चले ताकि हम उनका अनुसरण करते हुए फिर से परमेश्वर की उपस्थिति में, उनके राज्य के नागरिक बनकर प्रवेश कर सकें। यदि आप शक्तिहीन, नीरस, और उद्देश्यहीन उपदेशों से थक चुके हैं—

परमेश्वर का राज्य यहाँ है।

आज की दुनिया में भी यह राज्य आनंद, शांति, और उत्साह से भरा हुआ है। यह परमेश्वर की भविष्य की योजना नहीं है, बल्कि आज का कार्य है। इसलिए प्रभु आज ऐसे स्वयंसेवकों को बुला रहे हैं जो विश्वासियों के हृदयों में उनके राज्य की मानसिकता स्थापित करने के लक्ष्य में शामिल होना चाहते हैं।

यदि आप स्वयं को मसीही मानते हैं, स्वर्ग प्राप्त करने की आशा में जीते हैं, और मानते हैं कि आप वर्तमान सांस्कृतिक युद्ध से रैप्चर होकर बाहर ले जाए जाएँगे, तो आप शैतान की चालों के शिकार बन चुके हैं और उसकी योजनाओं की सफलता में सहभागी हो रहे हैं। वह हमेशा चाहता है कि आप परमेश्वर की बातों को स्वीकार करने में देर करें—इतनी देर कि वे आज की दुनिया पर प्रभाव न डाल सकें। जानिए कि शैतान आज आपसे क्या छीन रहा है।

क्योंकि यीशु ने जीवन और भक्ति के लिए आवश्यक सब कुछ पूरा कर दिया है, इसलिए हमारे परिवार, शहर, राज्य, देश और दुनिया का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम आज—कल नहीं—परमेश्वर की बातों को पहचानें, विश्वास करें, दावा करें, और उनमें जीवन जिएँ।

परमेश्वर ने क्रूस पर हमारी पहचान अपने बच्चों के रूप में स्थापित कर दी है।

एक इच्छुक और आज्ञाकारी हृदय ही पर्याप्त है ताकि आप परमेश्वर में अपना जीवन, गति, अस्तित्व, पहचान और नियति पा सकें। इसलिए अपने बच्चों के लिए एक सच्ची विरासत स्थापित करने के लिए पूरे मन से प्रयास करें। बिना किसी अतिशयोक्ति के मैं कह सकता हूँ— प्रवेश करें, इस जोखिम के साथ कि आप हमेशा के लिए बदल सकते हैं!

Table of Contents

English Prologue.....	4
Hindi Prologue.....	6
The Holy Spirit/Our Governor.....	10
English Section 61.....	10
Hindi Section 61.....	14

The Holy Spirit/Our Governor

English Section 61

A kingdom is a type of government led by a king with total authority over the people. The king also owns the people and the land. Because Christ bought us with His blood, He now owns us. This concept may be difficult for some, but rebellion is not a good choice.

Expanding his kingdom by acquiring new land is the primary way a king increases his kingdom and glory. He may occupy, purchase, or conquer land for an increase. When God, the king, wished to expand His empire, He started by creating the earth, which He needed for mankind. He added the universe to support it. He now owns the land and the remainder of the cosmos because He made it.

When a king acquires land, he will dispatch a governor to express his desires to the people and establish His new colony. One of the first requirements of the king/governor is for the people to learn the new king's language and understand his wishes.

Every person must then learn the kingdom's new laws. Disobedience is not an option. All disobedience is considered rebellion against the king and is punishable by death. The governor is the administrator of this new government. The governor must be a citizen of the king's established country because he must know the king and the kingdom's laws to teach the king's heart to the new colony.

After God created the earth, He placed His son, Adam, on the earth to rule over the planet as Him. For Adam to do this, he needed a body to live in, so his Father created a suit of dirt for him to use.

Adam had no one to share in His administration of the earth, so God divided him in half. Each half had its own body but was one person in nature. God named them Adam---mankind---Genesis 5:1-2. Adam was exactly like God and walked with God as one person.

[Link to T/C](#)

When Adam rebelled against God, they no longer saw things as God saw them, and the man named the woman Eve. For the first time, he saw her as a separate person from himself. This rebellion cost Adam his kingdom and authority. He had submitted himself to Satan and became like him in nature. Still, he lost his kingdom authority, not his sonship — Luke 15:11-32. This parable of the prodigal son, an example of salvation, explicitly shows the Father looking for the return of His son. However, the son wanted to return as a servant. How many of us do the same thing, believing God wants servants when the Father is looking for His sons to return?

Galatians 4:7

(7) Wherefore thou art no more a servant, but a son; and if a son, then an heir of God through Christ.

It is the assignment of the Holy Spirit to reveal the king's heart, Jesus, to us, but it is our place to have faith in the new king and agree with Him. Therefore, this is not a religious activity but a function of the new kingdom.

Hindi Section 61

एक राज्य एक प्रकार की सरकार है जिसका नेतृत्व एक राजा करता है और लोगों पर उसका पूर्ण अधिकार होता है। राजा लोगों और भूमि का भी स्वामी होता है। क्योंकि मसीह ने हमें अपने लहू से खरीदा है, अब वह हमारा स्वामी है। यह अवधारणा कुछ लोगों के लिए कठिन हो सकती है, लेकिन विद्रोह करना अच्छा विकल्प नहीं है।

नई भूमि प्राप्त करके अपने राज्य का विस्तार करना एक राजा के लिए अपने राज्य और महिमा को बढ़ाने का प्राथमिक तरीका है। वह वृद्धि के लिए भूमि पर कब्जा कर सकता है, खरीद सकता है, या जीत सकता है। जब परमेश्वर, राजा, ने अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहा, तो उन्होंने पृथ्वी का निर्माण करके शुरुआत की, जिसकी उन्हें मानव जाति के लिए आवश्यकता थी। उन्होंने इसे सहारा देने के लिए ब्रह्मांड को जोड़ा। अब वह भूमि और ब्रह्मांड के शेष भाग के मालिक हैं क्योंकि उन्होंने इसे बनाया है।

जब कोई राजा भूमि प्राप्त करता है, तो वह लोगों तक अपनी इच्छाओं को व्यक्त करने और अपनी नई बस्ती स्थापित करने के लिए एक राज्यपाल भेजता है। राजा/राज्यपाल की पहली आवश्यकताओं में से एक यह है कि लोग नए राजा की भाषा सीखें और उसकी इच्छाओं को समझें।

तब हर व्यक्ति को राज्य के नए कानून सीखने होते हैं। अवज्ञा कोई विकल्प नहीं है। सभी अवज्ञा को राजा के खिलाफ विद्रोह माना जाता है और मृत्युदंडनीय है। राज्यपाल इस नई सरकार का प्रशासक है। राज्यपाल को राजा के स्थापित देश का नागरिक होना चाहिए क्योंकि उसे राजा और राज्य के कानूनों को जानना चाहिए ताकि वह नई कॉलोनी को राजा की इच्छा सिखा सके।

ईश्वर द्वारा पृथ्वी की रचना करने के बाद, उन्होंने अपने पुत्र, आदम को, पृथ्वी पर स्वयं की तरह इस ग्रह पर शासन करने के लिए स्थापित किया। आदम के ऐसा करने के लिए, उसे रहने के लिए एक शरीर की आवश्यकता थी, इसलिए उसके पिता ने उसके उपयोग के लिए मिट्टी का एक वस्त्र बनाया।

आदम के पास पृथ्वी के अपने प्रशासन में साझा करने के लिए कोई नहीं था, इसलिए परमेश्वर ने उसे आधा-आधा करके दो भागों में बाँट दिया। प्रत्येक आधे के पास अपना शरीर था, लेकिन स्वभाव से वे एक ही व्यक्ति थे। परमेश्वर ने उनका नाम आदम — मानवजाति — उत्पत्ति 5:1-2 रखा। आदम बिल्कुल परमेश्वर के समान था और एक व्यक्ति के रूप में परमेश्वर के साथ चलता था।

जब आदम ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया, तो वे अब चीजों को वैसे नहीं देखते थे जैसे परमेश्वर देखते थे, और उस आदमी ने उस स्त्री का नाम हव्वा रखा। पहली बार, उसने उसे अपने से एक अलग व्यक्ति के रूप में देखा। इस विद्रोह के कारण आदम ने अपना राज्य और अधिकार खो दिया। उसने खुद को शैतान के अधीन कर दिया और स्वभाव में उसका जैसा हो गया। फिर भी, उसने अपना राजसी अधिकार खो दिया, अपनी पुत्रत्व की स्थिति नहीं — लूका 15:11-32। व्यर्थ-व्ययी पुत्र का यह दृष्टान्त, जो उद्धार का एक उदाहरण है, स्पष्ट रूप से दिखाता है कि पिता अपने पुत्र की वापसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हालाँकि, पुत्र एक दास के रूप में लौटना चाहता था। हम में से कितने लोग भी ऐसा ही करते हैं, यह मानकर कि परमेश्वर दास चाहते हैं, जबकि पिता अपने पुत्रों की वापसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं?

Galatians 4:7

7 इसलिये तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है, और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

[Link to T/C](#)

पवित्र आत्मा का यह कार्य है कि वह राजा, यीशु, का हृदय हमें प्रकट करे, परन्तु यह हमारा दायित्व है कि हम नए राजा पर विश्वास करें और उससे सहमत हों। इसलिए, यह कोई धार्मिक गतिविधि नहीं है, बल्कि नए राज्य का एक कार्य है।